देखने को मिलता है। उसने पिंजड़ों के द्वार खोलकर उनमें बंद पक्षियों को उड़ा-उड़ाकर उनके उड़ने तथा ऊपर उठने के ढंग से लेकर परों के फैलाव तक का अध्ययन किया। उसकी दृष्टि इतनी पैनी थी कि वह उन चीजों को भी देख लेते थे तथा उनके चित्र बना डालते थे जिन्हें तीव्र गति से चलने वाली चीजों को फोटोग्राफी के विकास से पहले अधिकांश लोग देख भी नहीं पाते थे। पन्द्रहवीं सदी में इस महान सृजनकर्ता ने ग्लाइडर, हवाई छतरी और हेलीकॉप्टर आदि की विशद कल्पना कर ली थी। लियोनार्दो के साथ खास बात यह थी कि कोई भी चीज उसे अपनी समझ से बाहर नहीं लगती थी। पूरी सृष्टि ही उसकी कुशाग्र बुद्धि की क्रीड़ास्थली थी। कला के क्षेत्र से लेकर विज्ञान के क्षेत्र तक जिसकी प्रतिभा ने अपनी सम्पूर्ण योग्यता का परिचय दिया उस जैसा प्रतिभाशाली कोई अन्य नहीं हुआ। वस्तुतः वह प्रथम आधुनिक चिंतक और वैज्ञानिक था, जिसने पन्द्रहवीं सदी के अधिकांश चिंतकों से परे हटकर सोचा और धार्मिक ग्रन्थों को आधार नहीं माना तथा सीधे-सीधे प्रेक्षण और प्रयोगों द्वारा ही वस्तुओं के कार्य और कारण को समझने की दिशा में प्रयत्नशील रहा।

दम्भ, अपुष्ट एवं दुर्बल प्रमाणों पर जनसामान्य की निर्भर रहने की आदत आदि।

समस्याओं को हल करने के लिये इस युग में जिस पद्धति का सहारा लिया गया उसे वैज्ञानिक पद्धति कहा गया, जिसकी कतिपय विशेषतायें थीं (i) हल की जाने वाली समस्या को स्पष्टतः समझना (ii) नियंत्रित परिस्थिति के भीतर प्रेक्षण और परीक्षण, ताकि दूसरे परीक्षण-कर्त्ताओं द्वारा उन्हें ठीक वैसे ही दोहराकर उनकी जाँच-पड़ताल की जा सके। (iii) प्रेक्षणों और परीक्षणों द्वारा अस्थायी निष्कर्ष निकालना (iv) इन परिणामों का संस्थापन करने के लिये अनेक प्रयोगों एवं प्रमाणों का सहारा लेना

To be continued

हम यह देख चुके हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रादुर्भाव की पृष्ठभूमि पुनर्जागरण में तैयार हो गयी थी। मानववादी पुनर्जागरण के फलस्वरूप डेमोक्रिटस, आर्किमिडीज तथा अन्य यूनानी विद्वानों की वैज्ञानिक रचनाओं के प्रकाशन को प्रोत्साहन मिला तथापि इसके फलस्वरूप वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण न हो सका, लेकिन इससे एक लाभ यह हुआ कि नई प्रविधियों में दिलचस्पी के कारण इतिहास में पहली बार सिद्धान्त का व्यवहार से तथा गणित का यांत्रिकी से संयोग हुआ। पुनर्जागरणकालीन कलाकारों ने भी विज्ञान के विकास में सहायता पहुँचाई। उन्होंने शरीर-रचना विज्ञान शरीर क्रिया विज्ञान तथा ज्यामिति में अपनी अभिरुचि व्यक्त की। लियोनार्दो द विंची ने चित्रकला को विज्ञान माना।

लियोनार्दो द विंची मात्र कलाकार ही नहीं था उससे भी कहीं आगे वह खगोलशास्त्री, वनस्पतिशास्त्री, जीवशास्त्री और भूगर्भशास्त्री था। मोम पर मस्तिष्क के भीतरी भाग का खाका उतार देने वाला वह पहला आदमी था। इसी प्रकार हृदय और आँखों की कार्यविधि का ज्ञान करने के लिये उनके काँच या चीनी मिट्टी के नमूने के निर्माण का विचार भी सबसे पहले उसके दिमाग में ही आया। भ्रूण सहित खुले गर्भ का पहला सही चित्र भी उसी के द्वारा बनाया गया। लियोनार्दो की वैज्ञानिक प्रतिभा का परिचय पाने के लिये हमें कुछ और जानना चाहिए। औद्योगिक क्रांति से बहुत पहले उसने ऐसी क्रेन का आविष्कार किया, जिससे किसी चूच को उठाया जा सकता था। उसने भाप से चलने वाला पिस्टन और गोलाकार दाँतों वाली साइकिल जैसी चेन भी बनाई जो फिसलती नहीं थी। वह पहला व्यक्ति था जिसने सुझाया कि हवा की शक्ति से भी ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। उसने गोताखोरों के लिये एक प्रकार का सूट एवं श्वासनली तथा दो पेंदे वाला एक युद्धपोत भी बनाया। लियोनार्दो की मौलिक प्रतिभा का ज्ञान वायुगतिकी के क्षेत्र में